LOK SABHA

Tuesday, May 16, 1972/Vaisakha 26, 1894 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

RE. ALLEGED MANHANDLING OF MEMBER BY WILLINGDON HOSPITAL STAFF

श्री चन्द्र शैलानी (हाथरस) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन का सदस्य हू और आप मेरी हालत देखिये । विलिंग्डन अस्पताल के डाक्टरों ने घटे भर तक मुझे बन्द रक्खा है और बुरी तरह से मारा है । आज सुबह मेरे भतीजे का, जो मेरे साथ रहता है और पढ़ता है, ऐक्सिडेंट हो गया । जब मेरा भाई उसको लेकर अस्पताल के इमर्जेंसी वार्ड में पहुंचा तो उसको वहां पर बुरी तरह से फटकारा गया । जब मैं वहा गया तो गेट कीपर ने मुझे अन्दर नहीं जाने दिया । मैंने कहा कि मैं मेम्बर पार्लियामेंट हू और मुझको जाने का अधिकार है, तो उस ने कहा कि इस तरह के सैकड़ों एम० पी० आते है । मेरा गरेबान पकड़ कर दो धक्के मारे । जब मैं अन्दर चला गया तो डाक्टर से अपने स्टाफ के लोगों से मुझे पिटवाया । यह हालत है ।

आपको ताज्जुब होगा कि उस डाक्टर ने फोर्थ क्लास के कर्मचारियों को मेरे खिलाफ भड़काकर एजिटेशन करवाया है । इस सदन के सम्मानित सदस्य और संसद्-कार्य मंत्री भाई श्री राज बहादुर भी वहां मौजूद थे और इस सदन के सम्मानित सदस्य श्री शशि भूषण भी मौजूद हैं, जिन्होंने इस वाक्ये को अपनी आंखों से देखा है । हो सकता है कि अगर पुलिस की मदद मुझे नहीं मिलती तो मुझको जान से भी मार दिया जाता । मुझे आधे घण्टे तक कमरे में बन्द रखा गया और मेरी इतनी बेइज्जती की है कि मैं समझता हूं कि दुनिया की किसी पार्लियामेंट के मेम्बर की नही हुई होगी । मेरी यह हालत है । तमाम कुर्ता फटा हुआ है और यह सदन के सामने है ।

मैं आप से निवेदन करूगा कि इस सम्मानित सदन की मर्यादा को कायम रखने के लिये आप इस सम्बन्ध मे पूर्ण जानकारी करे और जिन्होंने मेरे साथ दुर्व्यवहार किया है उनको कड़ी से कड़ी सजा दें, अन्यथा इस देश और इस सदन की मर्यादा का क्या होगा, यह मैं कह नही सकता (**व्यवधान**) ..

श्री नरसिंह नारायण पांडे (गोरखपुर) : अध्यक्ष महादय, यह बड़ा सीरियस मामला है ।

श्री चन्द्र शैलानी : मैं आपसे नम्र शब्दों मे निवेदन करता हू कि मेरा मस्तिष्क सतुलन मे नहीं है मुझे गालिया दीं, मुझे पिटवाया, मुझे इसकी चिन्ता नही, लेकिन अफसोस इस बात का होता है कि मैने कहा कि मैं प्रधान मत्री जी से और श्री दीक्षित से इस की शिकायत करूगा तो रमा कान्त नामक डाक्टर ने हजारों अपशब्द इस देश की प्रधान मन्त्री के लिये और स्वास्थ्य मन्त्री श्री दीक्षित के लिये कहे जिनको मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता था । जब इस तरह की व्यवस्था अस्पतालों में है तो मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आगे इसका न जाने क्या अंजाम होगा ।

An HON. MEMBER : What is the name of the hospital ?

SHRI CHANDRA SHAILANI : Willingdon Hospital, Emergency Ward. संसद् कार्य मन्त्री महोदय आ गये है, यह उन की आंखों के सामने का वाकया है । इस झगड़े

का कुछ हिस्सा मंत्री महोदय को भी पता है।

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour) : A very serious matter, Sir.

SHRI B. K. DASCHOWDHURY (Cooch-Behar) : A very serious matter.

श्री नरसिंह नारायण पांडे : यह बहुत ही अहम सवाल है। यह एक सम्मानित सदस्य का ही सवाल नहीं है, सारे पार्लियामेंट के मेम्बरों का सवाल है, इस सदन की गरिमा का सवाल है। इस मामले को बहुत सीरियसली टेक-अप करना चाहिये। उन डाक्टरों के खिलाफ, जिन्होंने माननीय सदस्य को अपमानित किया है, सख्त से सख्त कार्रवाई करनी चाहिये और कड़ी सजा देनी चाहिये। अध्यक्ष महोदय, आप स्वयं इस मामले को टेक-अप करें। आप विशेषाधिकार के मामले को लें और इसको विशेषाधिकार समिति को रिफर करें, जिससे ऐसा हो सके कि आगे चल कर इस तरह का कोई दुर्व्यवहार न हो सके।

SHRI JYOTIRMOY BOSU : Mr. Raj Bahadur was present. Let him say what he saw and let us hear him. There is a very serious matter.

डा० कैलाश (बम्बई दक्षिण) : मैं इस अस्पताल में दो तीन बार जा चुका हूं। मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ, लेकिन आम व्यक्ति के साथ इस तरह का व्यवहार हुआ करता है। मैं चुप रह सकता था, लेकिन जब इस प्रकार का व्यवहार यहां के किसी सभासद् के साथ हो सकता है तो आम जनता के साथ क्या व्यवहार होता होगा। मैंने अपनी आंखों से देखा है। इस अस्पताल में जितने भी इस कांड में जो डाक्टर्स हैं जो मैट्रन्स है और जो नर्सेज हैं उन्हें बुला कर पूछा जाना चाहिये। श्री राज बहादुर वहां मौजूद थे। मैं उनसे प्रार्थना करूंगा ...(**व्यवधान**)

SHRI NARSINGH NARAIN PANDEY : They should be brought before this House, here and now.

श्री शंकर दयाल सिंह (चतरा) : सबसे पहले डाक्टरों और कर्मचारियों को सस्पेंड किया जाये।

श्री चन्द्र शैलानी : मेरे भतीजे की हालत देख लीजिये। इतना भारी ऐक्सिडेंट हुआ (**व्यवधान**) अगर पुलिस मेरी मदद न करती तो मैं यहां नहीं आ पाता।

संसदीय कार्य तथा सीवहन और परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर) : मैं सरदार दरबारा सिंह को देखने के लिये नर्सिंग होम गया तो मैं ने पाया कि बहुत बड़ी भीड़ थी उसमें पुलिस वाले श्री शैलानी को निकाल कर कहीं से ला रहे थे। उन की हालत बहुत दुःखी और परेशान थी और आंखों में आंसू थे। उनके भतीजे को मैं ने देखा, उसके पैर में काफी चोट थी। मैं ने पूछा तो उन्होंने कहा कि मेरे साथ ज्यादती हुई है, मेरे साथ मार पिटाई हुई है। मैं ने कहा कि पहला काम आप यह कीजिये कि अपने भतीजे की मरहम पट्टी करवाइये क्यों कि खून नहीं निकलना चाहिये। तब यह उधर गये। जब लौट कर मैं चीफ मेडिकल आफिसर के कमरे में पहुंचा तो वहां पुलिस के अफसर उनकी रक्षा किए हुए थे। मैंने उनको तसल्ली दी। उन्होंने सारा हाल बतलाया। पुलिस वालों ने मुझसे कहा कि इनके साथ ज्यादती हुई है। वह घेराव जैसी स्थिति में थे, ऐसा उन्होंने कहा।

मैंने प्रो० डी० पी० चट्टोपाध्याय से बातचीत की। श्री उमाशंकर जी मिले नहीं। वह खुद अस्पताल गये हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि वह मामले की छान बीन करेंगे। मैं खुद दुःखी हूं कि उनके साथ यह घटना घटी है। कैसे घटी, क्यों घटी, क्या हुआ, इसका मुझे पता नहीं, लेकिन मैंने देखा कि वह काफी दुःखी और परेशान थे। काफी वहां मजमा था और उत्तेजना थी।

श्री नरसिंह नारायण पांडे : डाक्टर को सस्पेंड करना चाहिये और बार आफ दि हाउस के सामने लाना चाहिये।

SHRI JYOTIRMOY BOSU : We want to know about this. We want to have a

correct statement of facts before the House adjourns for lunch.

MR. SPEAKER : It is very shocking. It is really very sad that this thing happened. Half an hour earlier when I was sitting in my chamber, my Secretary told me that Mr. Shailani's brother wanted to speak to me on telephone and the incident had happened as Mr. Shailani himself had stated to you. Later on, I tried to contact Mr. Shailani. I was told, he was still in the hospital. Then my Secretary told me that he was not available. Later on I was told, he was in the Chief Medical Officer's room. In the mean while, I immediately sent our very senior officer of the Watch and Ward, of the rank of S.S.P. to go to the hospital and try to contact Mr. Shailani's brother and let me know the position if there is any deterioration. After all it is our duty to take our men there and see that nothing bad goes. In the mean while, the Minister for Parliamentary Affairs met me and he told me that he happened to be there in the hospital and was very sad that it happened.

Then, just while coming a few minutes earlier, I was able to trace the doctor, Dr. Bist, and he told me this. This is about 3 minutes back. I said : I am trying to contact Mr. Shailani, he is not at his house. He said he is in his room. So, some 2 minutes back he said he is still in his room and he could connect me. I said, it is almost 11 now. So this is his version and I see Mr. Shailani sitting here. His brother was not traceable. It is all very sad ; I told the doctor that hospitals are meant to save the people and not to kill them. The Minister told me that when he was there, the policemen met him. The policemen told him that they had almost killed the man. Their attack was so severe. The police had not reached and the Class IV people and others had almost finished the man. They advised the Minister also to save himself. This is the position.

So, whatever the House decides, at least I find this, they may be good to the V I Ps. and some others. But every time they try to bring the Members of Parliament, while talking to each other, or to the public, in contempt, telling them that they are not being allowed to work because of these V.I.Ps. I remember one day we wanted to know many V.I.Ps. were there and we could not know. They may be 5 or 6 because, after all, we are about 700 or 800 persons, including Rajya Sabha and ourselves ; somebody is bound to be ill ; some are old people and there might be some accidents and other things. So, if they go there, if this House has given them certain privileges, it does not mean that they should talk contemptuously about them. I do not like that at all. This is what I have been hearing. It is a different matter if the Minister and I go, and they show special attention. But then, the whole objective is lost if after we leave, there is a laughter amongst the people. That is all. I think this atmosphere that was being created is also responsible for today's incident. I wish the Minister would inquire fully into the Matter and come before the House with a full report. Then we should seriously take up this matter, say, in a Committee or in the House. After all, if this is the treatment meted out to the elected representatives of the people, what about the people themselves ? What about the public ? I know they are a little hard-worked, over worked ; but that does not mean that they should behave in this way. As public men, we get up early in the morning, keep on meeting people and do a lot of work, attending this House. I know that some of us are still awake at midnight : then we go to work early in the morning. We do not grumble. Why should these public servants do it like that ?

SHRI A. P. SHARMA (Buxar) : Because they are masters.

MR. SPEAKER : My full sympathies are with Shri Shailani. We are always with you. We really feel ashamed that this has happened. I tell you we will see that this is never repeated and full action is taken in the matter. Thank you.

SHRI RAJ BAHADUR : I would like to add that Shri Shashi Bhushan was also there. He played a helpful and noble part in trying to relieve the situation.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Construction of Jaldhakha Hydro-Electric Project (North Bengal)

*842. SHRI JYOTIRMOY BOSU : Will the Minister of IRRIGATION AND POWER be pleased to state :

(a) when the work on the construction of the Jaldhakha Hydro-electric Ptoject (North Bengal) was started and when it was scheduled to be completed ;